न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया

NEWSPAPERS ASSOCIATION OF INDIA

Volume XVIII वर्ष 18 | No. 03 अंक: 03 | February-2013 फरवरी-2013 | Rs. 5/- per copy

न्यूज़पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के संस्थापक डॉ. एम. आर. गौड़ जी की दूसरी पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि व मीड़िया कार्यशाला

❑ एन. ए. आई. डेस्क

स्वर्गीय डॉ.एम.आर गौड़ जी की दूसरी पुण्य तिथि पर स्वर्गीय डॉ. एम. आर. गौड़ व अन्य पत्रकार जो आज हमारे बीच नहीं रहे उन सभी को याद करते हुए 10 फरवरी 2013 को गाँधी शांति प्रतिष्ठान के सभागार मे श्रद्धांजलि दी जाएगी। साथ ही एन.ए.आई ने 10 फरवरी 2013 को गाँधी शांति प्रतिष्ठान के सभागार मे वरिष्ठ पत्रकारों द्वारा मीडिया जगत मे पढाई करने वाले छात्रों के लिए मीडिया कार्यशाला का आयोजन भी रखा गया है।

कार्यशाला मीड़िया में महिलाओं का योगदान और उनकी लोकतंत्र में भूमिका के आधार पर होगी। इस कार्यशाला मे कई पत्रकार व पत्रकारिता की पढाई कर रहे छात्र अलग–अलग संस्थानो से हिस्सा लेंगे व उन सभी पत्रकारों की आत्मा शांति के लिए श्रद्धांजलि देंगे जिनका योगदान भारतीय मीड़िया जगत में अनमोल है। हमें आशा हैं कि आप हमारे कार्यक्रम में भाग लेंगे और उन सभी पत्रकारों की आत्मा की शांति के लिए उन्हें श्रद्धांजलि देंगे आपकी उपस्थिति की अत्यधिक सराहना की जाएगी । कार्यक्रम – 10 फरवरी 2013 श्रद्धांजलि 11: 00 से 1 बजे तक गाँधी शांति प्रतिष्ठान 221/223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग , नई दिल्ली –110002

श्रद्धांजलि

स्वर्गीय डॉ . एम. आर गौड़ (संस्थापक, एन.ए.आई), स्वर्गीय सचिन विजय सिंह (निर्देशक,जेल डायरी न्यूज़ एक्सप्रेस), स्वर्गीय रवि भारती (संवादाता आज तक), स्वर्गीय राघ्वेन्द्र मुद्गल (न्यूज़ एक्सप्रेस), कमल शर्मा (आज तक), राजेन्द्र चौधरी (हरी भूमि), प्रदीप रॉय (जी न्यूज़)।

Global Festival of Journalism 1st Time In India and 2nd time in the world

A powerful meeting was held at Asian Education Group consisting of all the department heads of Journalism and NAI Central Committee Members at Marwah Studios to plan and execute the first ever festival of journalism at the global level from 12th to 14th February at Noida Film City.

This is going to be first time not only in India but in Asia when a festival of that stature and size highlighting journalism going to be held. We are probably now the second one in the World to have event of this nature after International Festival of Journalism in Italy" expressed Sandeep Marwah President of Marwah Studios.

Launching of Global Festival of Journalism Sh. R. K. Singh, Sh. Vipin Gaur, Sh. Sandeep Marwah, Alexandre de mortemat, Dr. Shobha Kumari

International Day of Journalism will be celebrated with great pomp and show on 12th February at Noida Film City with the launching of first ever Global Festival of Journalism in whole of Asia.

An international level carnival has been designed to celebrate the journalism, one of the oldest profession on earth. International organizations, national forums and agencies, government and private bodies will participate in this great valuable event.

Various activities are planned related to journalism as suggested by the heads of different departments of Journalism in these three days

Continue to page 2

सिक्किम बनेगी फूलो की नगरी, सजेगी 23 फरवरी से अंतर्राष्ट्रीय 'फूलों की मंडी'

अमर नाथ कुमार

फूलों के दिवानो के लिए एक बहुत बड़ी खुशखबरी हैं, भारत की सबसे बड़ी और पहली फूल प्रदर्शनी आनेवाली 23 फरवरी से सिक्किम में लगने वाली हैं जो की 27 फरवरी 2013 तक चलेगी। इस प्रदर्शनी के जरीय राज्य में फूल उत्पादन की असीम और क्षेत्र में किए गए विकास को प्रदर्शित किया जाएगा।

यह जानकारी राज्य के बागवानी सचिव एस प्रधान ने दिया। बताया की देश की पहली एवं एकमात्र "अंतर्राष्ट्रीय फूल प्रदर्शनी सिक्किम 2013" में अंतर्राष्ट्रीय पुष्प उत्पादकों, पुष्प व्यवसायियों और फूल के दीवाने पर्यटकों के लिए फूलों की 15,000 प्रजातियां प्रदर्शित की जाएंगी।

इस प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए कई देश जैसे – आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, हालैंड, अमेरिका, ताईवान, थाईलैंड तथा नेपाल की जानेमाने फूल कंपनियों तथा उत्पादकों ने अपनी आने की जानकारी दी है। तो हमारे देश की राज्य भी इस

मेले में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने के लिय अपनी पूरी तैयारी कर ली है। इसमें दिल्ली, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, हिमाचल, उत्तराखंड तथा जम्मू व कश्मीर सहित सात उत्तर पूर्वी राज्य ने अपने आने की जानकारी दी हैं।

प्रदर्शनी में 25 अंतर्राष्ट्रीय फूल व्यवसायी कंपनियां, 30 भारतीय फूल व्यवसायी कंपनियां तथा अलग – अलग जगहों के 190 फूल उत्पादक कम्पनी और व्यवसायी हिस्सा लेंगे।

इस पांच दिवसीय प्रदर्शनी में कम से कम 2 लाख पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने का लक्ष्य रखा गया है। वर्ष 2015 में सिक्किम राज्य आर्गेनिक फूल उत्पादन करने वाला देश का पहला राज्य बन जाएगा।

इस प्रदर्शनी का थीम 'सिक्किमप्र. तिक' के सबसे लोकप्रिय फूल 'सिमविडियम' को थीम फूल घोषित किया हैं।

इस अंतर्राष्ट्रीय गार्डन शो का आयोजन 'सरमसा गार्डन' में किया

शेष पृष्ठ 2 पर

रंग चिकित्सा से करें उपचार

Kalpana Karala
[D.Y.N, N.D.D.Y,
M.A (SOL, PRIKSHA MEDITATION YOG), PRANIC HEALER]

रंगों के माध्यम से हम आज कई रोगों का उपचार कर सकते हैं। आधुनिक विज्ञान की खोजों से अब यह बात प्रमाणित हो चुकी हैं, कि शरीर के रासायनिक तत्त्वों का सही संतुलन बनाएं रखने के लिए सूर्य की सात किरणें महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सूर्य की विविध रशिमयों से कई तरह के रोगों को दूर करने की समस्त उपचार प्रक्रिया Chromotherapy, colour Healing, आदि नामो से जानी जाती हैं।

लाल : उच्च रक्तचाप की समस्या से पीड़ित रोगिओं को लाल रंग का प्रयोग न के बराबर करना चाहिए। लाल रंग से पेंट किए गए बेडरूम का प्रयोग शयन के लिए न करें। बेडरूम की दीवारों का रंग नीला या हरा करवाना लाभप्रद होगा।

हरा : हरे रंग की प्रकृति ठंडी हैं। आज भी अस्पतालों में हरे रंग का इस्तेमाल होता हैं इस रंग से रोगी को शीघ्र लाभ मिलता हैं। हरे रंग से आंखो को ही नहीं, अपितु दिमाग को भी शीघ्र लाभ मिलता है। ह्रदय रोगी और गठिया वालो रोगिओ का हरा वस्त्र धारण करने से राहत मिलती हैं।

नीला : यह रंग दिमाग व नर्वस सिस्टम को राहत पहुंचाता हैं। डिप्रेशन में कुंडा को दूर करता हैं। उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए भी नीला रंग सुखदायक हैं। उन्हें नीली बोतल में रखे पानी का सेवन करना चाहिए। नीले रंग की प्रकाश किरणों के प्रयोग से असिार, संग्रहणी, खांसी व श्वास, मूल विकार, बुखार व सिरदर्द, भी ठीक होता हैं।

पीला : पीला रंग स्वभाव से गरम होता हैं। यह रंग पेट के रोगों को शान्त करता हैं। यह रंग सूर्य का प्रतीक माना जाता हैं। जिन्हें सर्दी जुकाम जल्दी–जल्दी होता हैं, उनके लिए यह रंग विशेष लाभकारी हैं। पीले रंग का प्रकाश किरणों में पाचन का विशेष गुण होता हैं। अपच हो जाने पर इस रंग के किरणों का प्रयोग लाभकारी हैं।

नारंगी : नारंगी रंग गरम होता हैं। यह रंग हार्मोन संबंधी गड़बड़ी ठीक करता है। यह रंग आनन्द का भी प्रतीक हैं एवं चिन्ता व तनाव को भी दूर करता हैं।

गुलाबी : भावुकता का प्रतीक गुलाबी रंग है। यह रंग दिमाग संबंधी रोगों का नाश करता हैं, साथ ही दिमाग को गतिशील भी बनाता हैं।

पर्पल : नर्वस सिस्टम को सामान्य रखने में पर्पल रंग बहुत सहायक हैं। मानसिक रोगिओं के लिए भी यह रंग लाभकारी हैं।

सफेद : सफेद रंग भावनात्मक पीड़ा को कम करता हैं। यह समृद्धि को भी बढ़ावा देता हैं। अध्ययन कक्ष के लिये यह रंग सबसे सर्वश्रेष्ठ हैं। यह रंग दिल एवं दिमाग को आराम

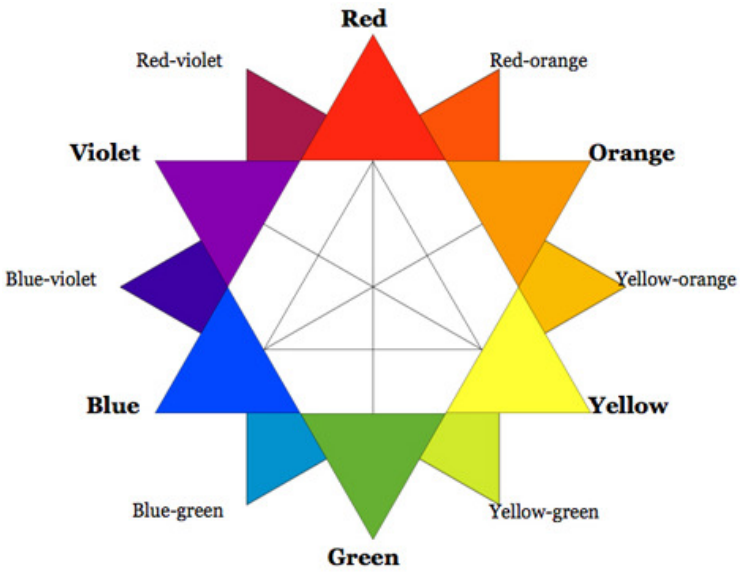

पहुँचाता हैं। इसका इस्तेमाल कहीं भी किया जा सकता हैं। सफेद रंग वैराग्य का भी प्रतीक हैं।

मैजेंटा : यह रंग करूणा और विनम्रता का सूचक हैं। डिप्रेशन से ग्रस्त व्यक्ति को इस रंग का प्रयोग अपने जीवन ज्यादा करना चाहिए।

ब्राउन : यह रंग पृथ्वी का प्रतीक हैं, यह भय को दूर करने में सहायक हैं साथ ही मानसिक रोगो में भी लाभकारी हैं।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

Global Festival of...

including Awards to the journalist. Asian Education Group has already generated and designed many successful national and international events in the field of film, television and media.

The Newspaper Association of India a body of more than 7000 journalist from all parts of India join hands with the first ever Global Festival of Journalism Noida 2013 to be held on 12-14th February at Noida Film City the hub centre for journalistic activities in India. We Really Love to be the part of this historical movement now started by the international media person Sandeep Marwah" and Newspapers Association of India (N.A.I) said Vipin Gaur General Secretary of (N.A.I).

The Festival will project national and international issues related to journalism through workshops, seminars, symposiums, screenings, news – bulletin, round table discussions etc. We have been pioneer in many fields, this time we are launching first ever journalism festival in Asia. We have declared 12th February as International Day of Journalism" Sandeep Marwah.

Large numbers of associations related to the field of journalism have joined hands with this decision to celebrate 12th February as International Day of Journalism. "IPBF is going to bring a new look to the festival and highlight the duties of journalism" said Shahid Mehdi Vice President ICCR and Council member of IPBF. We will leave no stone unturned to make this festival a successful one" said Nitin Saxena writer of Journalism Books and member IPBF.

International Children's Film Forum a body totally involved in the promotion of children's Cinema and care of unprivileged children and also maintaining 10 different branches of Apna School in Noida has joined hands with Global Festival of Journalism Noida 2013. International Film And Television Research Centre which is deeply into journalism research and especially electronic media has also joined hands with the Global Festival of Journalism Noida 2013. Approximately 18 to 20 countries will be part of the program and Radio Noida , Will Participate In Global Festival of Journalism , Indo Wales Creative Forum Supports Global Festival of Journalism , AAFT Is the Part of Global Festival of Journalism Noida , National Media Council , All Journalist Association , All India Human Rights Association will join Global Festival of Journalism Mr. Surya Rajput Chief Editor Daily NAND Darshan & President (NAI), Shri Yash Mehta, Chairman 4 Real News, Amitabh Agnihotri Managing Editor Samachar Plus, N.K Singh Secretary General - Broadcast Editor Association , Onkar Singh Editor Sunday Indian, Atul Agarwal, Executive Editor –samachar Plus, Mr. Alok Awasthi CEO Shri 7 News , Ajay Upadhyay Editor in Chief Shri 7 News , PTC News Editor Pervez Zaidi, Will be the special guest on Global Festival of Journalism Said Shri Sandeep Marwah .

सिक्किम बनेगी...

जाएगा जो की राजधानी गंगटोक से 12 किलोमीटर दूरी हैं।

इस गार्डन में स्टेट ऑफ आर्ट कन्वेशन हाल, ओपन कोर्ट, फूड कोर्ट, ओपन एयर एम्पीथियेटर जैसी सुविधाओ का इंतजाम किया जायेगा। सिक्किम में आयोजित की जाने वाली यह दूसरी अंतर्राष्ट्रीय फूल प्रदर्शनी है। इससे पहले 2008 में आयोजित की गई थी। पहली प्रदर्शनी में 22 अंतर्राष्ट्रीय फूल कंपनियों, 65 भारतीय कंपनियों तथा 15 राज्य सरकारों ने विभिन्न प्रजाति के फूलों का प्रदर्शन किया था। प्रदर्शनी में एक लाख पर्यटकों ने फूलों की प्रजातियों को देखने के लिय यह आये थे। तो आप अगर फोलों का दीदार करना चाहते हैं तो जरुर से जरुर फोलों के इस वादियों में आए और अपने जीवन में भी इन रंग–बिरंगे फूलों की तरह रंग भर ले।

कुदरती दवाओं से स्वास्थ्य की दुरुस्ती

पूरे वर्ष के 12 महीनों में समयानुसार मौसम बदला करता है। यूं तो जाड़ा–गर्मी–बरसात से सभी को रूबरू होना पड़ता है। इनसे बचाव के लाख उपायों के बावजूद मौसमी मार का शिकार हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है इन मौसमों में स्वास्थ्य कैसे फिट रखा जाए। सर्दियों के जाते समय या कि सर्दियां आते ही स्वास्थ्य संबंधी परेशानी शुरू हो जाती है। सर्द हवाओं और व्यायाम की कमी से हमारी दिनचर्या बिगड़ जाती है। कई कोशिशों के बावजूद कफ, कोल्ड और साइनस जैसे परेशानी आम होती है। इस सर्दी में सांस से जुड़े संक्रमण से बचने का सबसे बेहतर तरीका है अपने खानपान में थोड़ा बदलाव किया जाए और लाइफस्टाइल में प्राकृतिक चीजों को मिलाया जाए। सर्दी के दिनों में कफ एलर्जी बढ़ने लगती है, जिससे बलगम, खून जमना, लंग इंफेक्शन, खांसी और जुकाम जैसी समस्या आम होती है। इस मौसम से जुड़ी और भी कई समस्याएं हैं जैसे अस्थमा, साइनस, आर्थराइटिस, वजन का बढ़ना और उच्च कोलेस्ट्राल स्तर। इस मौसम में आयुर्वेद, नैचुरोपैथी और यूनानी दवाइयां बच्चों और बड़े दोनों को ठंड से बचाने में मदद करती हैं। प्याज और लहसुन का सेवन करना इस मौसम में बेहतर होता है। कच्चा प्याज और लहसुन खाना, गुड़ के साथ उनका जूस पीना कफ और कोल्ड से बचने का सबसे बेहतरीन तरीका है। अगर कच्चा लहसुन और प्याज खाना पसंद नहीं तो आप इसे सूप और सलाद में भी डालकर खा सकते हैं।

अदरक और तुलसी को पानी में तब तक उबालें, जब तक वह आधा न हो जाएं। फिर इसे सादा या एक चम्मच शहद के साथ पीएं। यह घोल छह साल से ऊपर के बच्चों के लिए बेहतर होता है। बच्चों के पैरों के तलवे और हथेली पर लहसुन को तिल के तेल में पका कर मालिश करने से रक्त संचार बेहतर होता है। बड़ों की बात करें तो सौंफ, काली मिर्च, काला नमक और लौंग के मिश्रण में शहद मिलाकर खाएं। यह बेहतरीन इलाज हर तरह के गले के संक्रमण, कफ और

कोल्ड से राहत देता है। इस मिश्रण को गर्म पानी के साथ या गर्म पानी में घोलकर पीया जा सकता है। हल्दी का सेवन एक तरह से एंटीसेप्टिक का काम करता है जिससे साइनस जैसे संक्रमण भी दूर होते हैं। इस मौसम में प्राचीन यूनानी दवाइयां खासकर जोशांदा सबसे कारगार दवाई साबित होती है। बच्चों और बड़ों में होने वाले हर तरह के कफ, कोल्ड, अस्थमा, साइनस और फेफड़ों के संक्रमण में ये दवाइयां कारगर होती हैं। हालांकि कई लोग जोशांदा जैसी दवाइयां नहीं लेते। जबकि इसमें प्राकृतिक मिश्रण जैसे यूकलिप्टस, लिकराइस, मालाबार नट्, हिसोप, पेपरमिंट और सौंफ होता है तो सर्दी में होने वाली बीमारियों में यह बेहतर काम करता है। इन सारे हर्बल को पानी में तब तक उबालना चाहिए, जब तक यह आधा न हो जाए। फिर इस मिश्रण का काढ़े के रूप में तब लें जब यह थोड़ा सा गर्म हो।

हर दिन गर्म पानी में थोड़ा सा नमक मिलाकर गरारे करने से गले का संक्रमण थोड़ा कम होता है। हर दिन ब्रश के बाद गरारे करना फायदेमंद होता है। दूसरा तरीका है सर्दी के दौरान हफ्ते में दो दिन भाप लेना। यह प्रक्रिया जुकाम होने से रोकने से मदद करती है। यह नेजाल ट्रैक्ट संक्रमण को दूर रखती है। साइनस जैसी बीमारी से बचने के लिए हल्दी की जड़ों को जलाकर उसका धुआं सूंघना फायदेमंद होता है। हल्दी को सबसे लाभदायक एंटीसेप्टिक माना जाता है जो साइनस संक्रमण को रोकने में कारगार होती है। साथ में सर्दी में होने वाले कफ और कोल्ड को भी दूर रखती है।

Kamal Haasan

Kamal Haasan (born 7 November 1954) is an Indian film actor, screenwriter, producer anddirector, considered to be one of the leading method actors of Indian cinema.He is widely acclaimed as an actor and is well known for his versatility in acting, earning him the Tamil honorific name Ulaganayagan (English: Universal Hero). Kamal Haasan has won several Indian film awards, including four National Film Awards and nineteen Filmfare Awards, and is known for having starred in the largest number of films submitted by India in contest for the Academy Award for Best Foreign Language Film.[8] In addition to acting, screenwriting and directing, he has also featured in films as a songwriter, playback singerand choreographer. His film production company, Rajkamal International, has produced several of his films. In 1990, he was awarded the Padma Shri for his contributions to Indian cinema. Kamal Haasan is also a recipient of an Honorary doctorate by Sathyabama University. In 2009, he became one of very few Indian actors to have completed 50 years in cinema.

After several projects as a child artist, Kamal Haasan's breakthrough into lead acting came with his role in the 1975 drama Apoorva Raagangal, in which he played a rebellious youth in love with an older woman. He secured his second Indian National Film Award for his portrayal of a guileless school teacher who tends a childlike amnesiac in 1982's Moondram Pirai. Haasan was particularly noted for his performance in Mani Ratnam's Godfatheresque Tamil film Nayagan (1987), which was ranked by Time magazine as one of the best films of all time. Since then he has gone on to appear in other notable films such as Anbe Sivam and his own productions, Hey Ram and Virumaandi, as well as Dasavathaaram, in which he appeared in ten distinct roles.

Career

Debut as child artiste: 1960-1963

There are two versions regarding his entry into films. One version has it that, as a little boy, he accompanied a doctor who went to treat an ill woman at the home of movie mogul A V Meyyappa Chettiar (father of AVM Saravanan). On hearing loud shouting from a first-floor tenant of the bungalow, the doctor became uneasy. Young Kamal Haasan strode up the stairway to ask the noise-maker not to shout over the phone as someone was ill, leaving the person astonished. An impressed Meyyappa Chettiar later provided him an entry into films. The other version is that when young boy Kamal Haasan accompanied a family doctor of Meyyappa Chettiar to his house, producer AVM Saravanan noticed Kamal as a hyperactive child. He took him over and introduced to AV Meyyappa Chettiar who was looking for a young boy to play a role in the movie Kalathur Kannamma.

Kamal Haasan was six-years-old when he faced the camera for the first time in

Kalathur Kannamma, which was directed by A. Bhimsingh. The film was released on 12 August 1960. The film starred veteran actor Gemini Ganesan and won the President's Gold Medal. Following his successful debut, he starred in five more films as a child actor sharing screen space with Sivaji Ganesan andM. G. Ramachandran. Kamal Haasan's family was very supportive of his interest in the performing arts. He joined a theatre repertory, TKS Nataka Sabha, that was headed by T.K. Shanmugam. He continued his school education at the Hindu High School in Triplicane. The time spent as part of the theatre company shaped Kamal Haasan's craft and was instrumental in his interest in makeup.

Success in the south: 1976-1980

The late 1970s was a period that saw Haasan's continued collaboration with K. Balachander, who cast him in many of his social-themed films. In 1976, Balachander cast him as a womaniser trying to woo many women in Manmadha Leelai which was followed byOru Oodhappu Kan Simittugiradhu, which won him his second consecutive Regional Filmfare (Tamil) Best Actor Award. Later, Kamal Haasan appeared in the drama Moondru Mudichu with Rajinikanth and Sridevi, another Balachander film. Avargal (1977) was one of the most sensitive movies on woman liberation, for which he learnt the art of ventriloquism. The film was also remade in Telugu as Idi Katha Kaadu (1979) with Haasan repeating his role. 16 Vayathinile won him his third consecutive best actor award, where he appeared as a village bumpkin, along with Rajinikanth and Sridevi. In 1977, he starred in his first Kannada film, Kokila, which was the directorial debut of another friend and mentor, Balu Mahendra. The same year, he acted in a Bengali film, Kabita. In 1978, he debuted in the Telugu film industry as a lead actor with the cross-cultural romantic film, Maro Charithra directed by K. Balachander. The film was regarded a cult-classic and was also Haasan's first major hit. His fourth consecutive Filmfare award came with Sigappu Rojakkal, an anti-hero thriller in which he played a psychopathic sexual killer.

Few of the other famous films in this period were the Telugu film Sommokadidhi Sokkadidhi, where he played dual roles, the musical entertainer Ninaithale Inikkum, the snake horror film Neeya and Kalyanaraman.

At the end of this period, he had won six regional Best Actor Filmfare Awards, including four consecutive Best Tamil Actor Awards and became a famous actor in South India by having starred in all languages.

Personal life

Photograph of Kamal Haasan with M. G. Ramachandran

Kamal Haasan was born in the town of Paramakudi in the Ramanathapuram district of Tamil Nadu, to a criminal lawyer named D. Srinivasan and his wife Rajalakshmi. One source says that his parents originally named him Parthasarathy.Another says that one of the four given names in his house was Parthasarathy (As revealed to Surya Sivakumar in the Shruti Haasan episode of Neengalum Vellalam Oru Kodi). Kamal Haasan was the youngest of four children, the others being Charuhasan, Chandrahasan and Nalini Raghu. His father was a martinet. He wanted all his sons (Chandrahasan, Charuhasan, Kamalahaasan) to study and do well. The two elder brothers followed their father's example and studied law. Kamal spent his childhood learning everything except staying focussed on his studies.

Kamal Haasan had referred to his parents in couple of his films, with references being made in Unnaipol Oruvan as well as in the song Kallai Mattum from Dasavathaaram.His eldest brother Charuhasan, like Kamal Haasan, is a National Film Award-winning actor, who appeared in the Kannada film Tabarana Kathe, among others. Kamal's niece (Charuhasan's daughter), Suhasini is also a National Film Award winner and is married to director and fellow Award winner Mani Ratnam, who collaborated with Kamal Haasan on 1987'sNayagan. Chandra Haasan has appeared as the producer for several of Kamal Haasan's films as well as being an executive of Kamal Haasan's home production company, Rajkamal International. His brother's daughter Anu Hasan has appeared in several films in supporting roles, most notably in Suhasini's Indira. His sister Nalini Raghu is a dance teacher. Kamal Haasan later named an auditorium after his sister as Nalini Mahal. Her son, Gautham, played Kamal Haasan's grandson in his directorial venture, Hey Ram.

Political views

Kamal Hassan has refrained from politics in spite of several people from the film Industry taking the plunge in Politics. Kamal Hassan is basically considered by most as a person with Left-leaning or Independent political alignment. He once said, the kind of politics he would indulge would get him killed in 365 days

Awards and honours

Kamal Haasan, a Padma Shri awardee, is the most decorated actor in the history of Indian cinema.[10] At the age of seven, he won the President's Gold Medal for his debut film Kalathur Kannamma. Haasan holds the record for the most number of National Film Awards-three Best Actor awards and one award for producing the Best Regional Film-for an actor. The 1992 Tamil film Thevar Maganwhich won the National Film Award for Best Feature Film in Tamil was produced by Kamal Haasan. Moreover, Haasan holds a record nineteen Filmfare Awards, ranging across five languages. After his latest award in 2000, he wrote to the organisation requesting exemption from further awards. In 2003, his films Hey Ram, Pushpak, Nayagan and Kuruthipunal were showcased under the "Director in Focus" category at the Rotterdam Film Festival. In 2004, Virumaandi won the very first "Best Asian film" award atPuchon International Fantastic Film Festival

सम्पादकीय

पीएम–पीएम का खेल

जब तक 2014 में संसद के नये चुनाव नहीं हो जाते और प्रधानमंत्री नहीं बन जाता तब तक पीएम–पीएम का खेल खेलने में कोई हर्ज नहीं हैं। कांग्रेस में दबकर, चुपके–चुपके यह खेल चल रहा है तो भाजपा खुलकर खेल रही है। पार्टी के नये राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह को महसूस हो रहा है कि पार्टी में चल रहे पीएम–पीएम के खेल से व्यर्थ की कटुता बढ़ रही है। इसलिए उन्होंने गत 30 जनवरी को भाजपाइयों को सलाह दी कि वे संयम से काम करें। उन्होंने कहा अभी से प्रधानमंत्री पद की घोषणा के बजाय जनता की समस्याएं सुनें और उनको दूर कराने के लिए जन संघर्ष करें। श्री राजनाथ सिंह ने यह सलाह भाजपाइयों को तब दी जब प्रधानमंत्री पद के लिए श्रीमती सुषमा स्वराज का नाम जोर–शोर से उछाला गया। उधर, कांग्रेस में जब से राहुल गांधी को उपाध्यक्ष का प्रभार सौंपा गया है, तभी से कई लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि भावी प्रधानमंत्री की तरफ एक और कदम बढ़ा है जबकि अपने स्तर से पी. चिदम्बरम, एके एंटनी और कांग्रेस के सहयोगी दल राकांपा के शरद पवार भी प्रधानमंत्री की दौड़ में लगे हैं। तीसरा मोर्चा तो अभी शक्ल ही अख्तियार नहीं कर सका है, इसलिए इसमें कौन–कौन चेहरे आएंगे और उनमें कौन दावेदार होगा, यह कहना मुश्किल है।

❑ विपिन गौड़

भाजपा के कई नेताओं द्वारा गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करने की मांग उठाने और इसी के बाद श्रीमती सुषमा स्वराज को प्रधानमंत्री पद का बेहतर उम्मीदवार घोषित करने की चर्चा के दौरान ही श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि यह समय प्रधानमंत्री का राग अलापने के लिए नहीं है बल्कि जनता के विश्वास को जीतना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। श्री सिंह को उनके कार्यालय में कई लोग बधाई देने आये थे, उसी समय उन्होंने यह सलाह दी। राजनाथ सिंह ने पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा कि वे पार्टी को मजबूत करने के लिए काम करें। उन्होंने कहा भाजपा के नेता अच्छी वाणी बोलें और उनमें संयम होना चाहिए। संभवतः उनका इशारा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी के हाल ही में दिये उस बयान की तरफ था जिसमें उन्होंने आयकर अधिकारियों को चेतावनी दी थी। ध्यान रहे कि श्री गडकरी की कम्पनी पूर्ति समूह में कई कम्पनियों के निवेश पर सवाल उठाये गये और इसी सिलसिले में ठीक उसी दिन आयकर विभाग द्वारा पूर्ति समूह के कई कार्यालयों पर छापा मारा गया था, जब गडकरी का राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए दुबारा चयन होना था। नितिन गडकरी ने बाद में आयकर विभाग के अधिकारियों को अप्रत्यक्ष रूप से धमकी दी कि यदि भाजपा सत्ता में आयी तो आयकर विभाग के अधिकारियों की खबर ली जाएगी। विपक्षी दलों ने इसके लिए भाजपा की आलोचना भी की थी।

इसके अलावा भाजपा में नरेन्द्र मोदी के समर्थक असंयमित भी हो रहे हैं। पार्टी के वरिष्ठ नेता जो नितिन गडकरी के खिलाफ खुलकर बोले थे, वे अब अपने को श्री राजनाथ सिंह से जोड़ना चाहते हैं। नितिन गडकरी पर आरोप लगने के बाद वरिष्ठ नेता रामजेठ मलानी, यशवंत सिन्हा और शत्रुघन सिन्हा ने कहा था कि जब तक गडकरी दोषमुक्त नहीं हो जाते, तब तक उन्हें अध्यक्ष की कुर्सी छोड़ देनी चाहिए। इसी बात को लाल कृष्ण आडवाणी ने भी उठाया था जब गडकरी के दुबारा अध्यक्ष पद पर ताजपोशी की तैयारी हो चुकी थी। अब यशवंत सिन्हा और श्री रामजेठ मलानी ने नरेन्द्र मोदी को भावी प्रधानमंत्री घोषित करने की मांग उठा दी है। उधर, श्री लाल कृष्ण आडवाणी को ही यह श्रेय दिया जा रहा कि उनकी बदौलत राजनाथ सिंह दुबारा राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाये गये हैं क्योंकि संघ के दबाव के सामने दूसरे नेता खुलकर बोलने को तैयार नहीं थे। इसलिए आडवाणी के समर्थक भी जोश में आ गये हैं। यशवंत सिन्हा ने जब नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद के लिए सबसे उपयुक्त बताया तो रामजेठ मलानी भी पीछे कैसे रह सकते थे। इसी बीच शिवसेना ने अपनी तरफ से श्रीमती सुषमा स्वराज का नाम आगे बढ़ा दिया। शिवसेना प्रवक्ता संजय राउत ने याद दिलाया कि पूर्व शिवसेना प्रमुख स्व. बाल ठाकरे ने श्रीमती सुषमा स्वराज को सबसे योग्य प्रधानमंत्री उम्मीदवार बताया था। इस प्रकार नये राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह के सामने यह दिक्कत आ रही थी कि 2014 के लोकसभा चुनाव से पहले ही भाजपा बिखराव की ओर बढ़ने लगी है। कुछ लोग इसके पीछे कांग्रेस की रणनीति देख रहे हैं लेकिन सियासत में यह कोई नई बात नहीं है। भाजपा ने ही श्रीमती सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की तिकड़ी को बिखेरने की बहुत कोशिश की, मीडिया के माध्यम से भी प्रयास कराये गये लेकिन सफलता नहीं मिली। इसलिए भाजपा को साम्प्रदायिक साबित करने की जगह कांग्रेस यदि उसके नेताओं को प्रधानमंत्री पद के नाम पर लड़ाना चाहती है तो इसमें आश्चर्य नहीं किया जा सकता। राजग के सहयोगी दल धर्मनिरपेक्ष नेता को ही प्रधानमंत्री बनाने पर सहमत होंगे। नरेन्द्र मोदी के मामले में यही पक्ष नकारात्मक है लेकिन राजनाथ सिंह अभी इस विवाद को दबाकर रखना चाहते हैं। उन्होंने राजग के घटक दलों को एक करके 2014 का चुनाव लड़ने की रणनीति बनायी है। इसलिए उनको पीएम–पीएम का खेल इसमें बाधक नजर आ रहा है।

गणतंत्र की चुनौतियां

❑ दिलीप कुमार

विश्व का सबसे बड़ा गणतंत्र राष्ट्र कहलाने वाले हमारे इस देश की स्वतंत्रता व गणतंत्रता, स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले महानायकों का स्वप्न था, जिसे उन्होंने हमारे लिए यथार्थ में परिवर्तित कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले महानायकों में से एक नायक सुभाषचंद्र बोस ने कभी कहा था कि 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'। खून भी बहा और आजादी भी मिली।

आज हम आजाद हैं, एक पूर्ण गणतांत्रिक ढांचे में स्वतंत्रता की सांस

ले रहे हैं। चाहे वैधानिक स्वतंत्रता हो या फिर वैचारिक स्वतंत्रता, या फिर हो सामाजिक और धार्मिक स्वतंत्रता, आज हम हर तरह से स्वतंत्र हैं। पर क्या सचमुच हम स्वतंत्र हैं? क्या हमारी गणतंत्रता हमें गणतंत्र राष्ट्र का स्वतंत्र नागरिक कहलाने के लिए काफी है? विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के गिरते चरित्र ने 63 वर्ष के गणतंत्र के सम्मुख अनेक चुनौतियां खड़ी की हैं जिनसे देश का आम आदमी प्रभावित है। गणतंत्र गनतंत्र बन गया है और गण पर तंत्र पूरी तरह हावी है।

देश के कर्णधार लंबे–चौड़े भाषण देने और जनता को आश्वासनों की घुट्टी पिलाने से बाज नहीं आते हैं। दुलकी चाल से विकास के इस तरह के दिवास्वपनों का क्या वास्तविकता में कोई आधार भी है? बुनियादी आर्थिक कारक तो इससे उल्टी ही कहानी कहते नजर आ रहे हैं, ऋणों का बढ़ता बोझ है कि बढ़ता ही जा रहा है। विदेशी ऋणों का ब्याज आदि को भुगतान का बोझा उस मुकाम पर पहुंच गया है, जहां पिछले कुछ वर्षों से तो शुद्ध रूप से पूंजी का देश से बाहर की ओर ही प्रवाह हो रहा है, यानी पहले जो ऋण लिए गए हैं उनसे संबधित भुगतानों की भरपाई के लिए ही नए ऋण लेने पड़ रहे हैं। देश के विकास के बड़े–बड़े आंकड़े है और इन आंकड़ों की सीढियों पर खडे होकर हम देश की प्रगति और विकास का नाप–तौल करते है। प्रगति के यह तमाम आंकड़े झूठे लगते है, जब देश के इस कोने से उस कोने तक गरीबी की रेखा और गहरी होती हुई दिखाई देती है। देश आज भी गरीबी की दौर से गुजर रहा है। करोड़ों लोग आज भी खुले आसमान के तले सोते है। वे धरती माता को ही बिछौना और ओढना बनाए जिन्दगी को ढो रहे है। चारों और आज भी भूख है। करोड़ों लोगों को आज भी दो वक्त का खाना नसीब नहीं हो रहा है। लोग दर दर की ठोकरें खाने पर मजबूर हैं। न उनके लिए रोटी, न उनके लिए रोजी और उनके लिए दवा–दारू का पूरा इंतजाम है। ऐसा लगता है देश की जिन्दगी को कोई लील गया है। हालात बद से बतर हो रहे है मगर भारतीय गण ने न तो साहस छोड़ा है न उसका मनोबल टूटा है। अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए वह आज भीतर और बाहर के दुश्मनों का लौहा ले रहा है। आतंकवाद, साम्प्रदायिकता और अलगाववाद के त्रिकोण में धसा भारत का गणतंत्र नई करवट ले रहा है और इन राष्ट्र विरोधी तत्वों से डट कर मुकाबला कर रहा है।

भारतीय गणतंत्र के लिए नई आर्थिक नीतियां, सांप्रदायिकता, आतंकवाद आदि न सिर्फ बड़ा खतरा हैं बल्कि भारी चुनौतियां भी हैं। वास्तव में तत्त्ववादी ताकतें सांप्रददायिक ध्रुवीकरण को तीखा करने की कोशिश कर रही हैं। आज देश में जिन उदारीकरण– विश्वीकरण–निजीकरण की नई आर्थिक नीतियों को लागू किया जा रहा है, उनसे मंहगाई और बेरोजगारी बढ़ रही है, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं आम आदमी की पहुंच से बाहर हो रही हैं, लोगों की खाद्य और सामाजिक सुरक्षा खतरे में पड़ गई है और इन सबके चलते हो रहे सांस्कृतिक पतन के कारण खासकर युवा वर्ग कुंठा और निराशा के गर्त मं डूब रहा है। इसकी वजह से जो व्यापक जन–अंसतोष पैदा हुआ है, उसको सांप्रदायिक ताकतों ने आम लोगों की धार्मिक भावनाओं को शोषण कर बड़ी चालाकी से भुनाया है।

'ट्रांसपेरेंसी इंटरनेश्नल' द्वारा करवाए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में करीब आधी से अधिक जनसंख्या जो सार्वजनिक सेवाओं में कार्यरत है, घूस या सिफारिश से नौकरी पाती है। जहां हम दिन–रात विकास की मुख्यधारा से जुडने के लिए प्रयासरत हैं और अपने समाज को अपेक्षाकृत अधिक अच्छी जीवनशैली देने के लिए जुटे हुए हैं, वहीं कहीं न कहीं हमारे नैतिक मूल्य और आदर्श प्रतियोगिता की इस चक्की में पिसते जा रहे हैं। कितनी अजीब बात है कि 80.5 प्रतिशत हिंदू, 13.4 प्रतिशत मुस्लिम, 2.3 प्रतिशत ईसाई, 1.9 प्रतिशत सिक्ख, 1.8 प्रतिशत अन्य धर्म के अनुयायियों वाले इस देश में, जो अपने आप को भाईचारे और सद्भावना का दूत मानता है, आज भी गोधरा और बाबरी ढांचा जैसी घटनाएं होती हैं।

सबसे अधिक युवाशक्ति वाला हमारा यह देश आज भी आरक्षण के ताने–बाने में उलझा रहता है और युवाओं को अभी तक वह परिवेश नहीं मिल सका है, जिसकी इस देश को वास्तविक रूप से आवश्यकता है। यहां तक कि रोजगार की संभावनाओं का केवल 16.59 फीसदी हिस्सा ही अभी तक महिलाओं को मिल सका है। धर्मान्धता के चलते इस गणतंत्र की आत्मा पर कई बार कभी 'भागलपुर नरसंहार', यूपी के कई जिलों में हालिया साम्प्रदायिक दंगे, इन्दिरा गांधी की मौत पर भडके दंगों, तो कहीं 'गुजरात दंगों' के इतने गहरे घाव लगे हैं कि डर लगता है कहीं यह नासूर ना बन जाए। शिकार हर वर्ग, हर धर्म के लोग रहे, पर घायल भारतीय गणतंत्र हुआ है।

गणतंत्र का आईना जिसमें देश के करोड़ों लोग अपने चेहरे निहारते हैं, मुठ्ठी भर चेहरे हंसते हुए दिखते हैं परन्तु करोड़ों चेहरों पर अब भी उदासी के बादल छाए हुए दिखाई दे रहे हैं। इस समय राष्ट्र एक बडे नैतिक संकट के दौर से गुजर रहा है। नए मूल्यों को स्थापित करने का दावा करने वाले स्वंय इतने भ्रष्ट हो गए है कि उनकी कथनी और करनी पर विश्वास नही किया जा सकता है। सारे देश में भ्रष्टाचार व्याप्त है। और वह भी अपनी पराकाष्ठा को पार कर गया है। इतना ही नहीं अब तो भ्रष्टाचार हमारे जीवन का अंग बन गया है। भ्रष्टाचार के विरूद्ध खडे होने वालो का क्या हश्र होता है, हम भली भांति इसे देख रहे हैं।

बढ़ती हुई मंहगाई ने लोगो का जीना हराम कर दिया है। चीजों के दाम बेलगाम बढ़ रहे हैं। चूल्हों को जलाना मुश्किल हो गया है। मुठ्ठी भर लोग सारे समाज का शोषण कर बोझ नोच–खा रहे है। एक नया वर्ग पैदा हो गया है। वह वर्ग फूल फल रहा है। वही वर्ग काले पैसे की कमाई पर शासन और समाज पर हावी हो गया है। और राजनीति और समाज का नेतृत्व कर रहा है। और पथ प्रदर्शक बना बैठा है। इन सब का परिणाम यह हो रहा है कि गण और तंत्र अलग हो गए है। गण पर नौकर शाही हावी है और नौकर शाही का रवैया भी वही अंग्रेजो जैसा है, जिनके समक्ष जनता तो मक्खी–मच्छर है। नारी की अस्मिता सुरक्षित नहीं है। ऐसा लगता है की जैसे इन पर लगाम लगाने वाला कोई नही हैं। जिन्हे लगाम सौपी गई है वे स्वयं कायर सिद्ध हो रहे है युवा रोजगार पाने को दर दर भटक रहे है। सारे समाज में तनाव और आक्रोश व्याप्त है और वह तनाव से मुक्ति पाने की तलाश में है। चारों और घटाटोप अंधेरा छाया है। सही और सच्चे गणतंत्र की सार्थकता तभी है जब देश के करोड़ों लोगों को तमाम मूलभूत सुविधाएं प्राप्त होंगी। जो संविधान में वर्णित है। आज के दिन हम यह शपथ ले कि देश को बर्बाद और तबाह करने वाली शक्तियों को हम समाप्त करके रख देंगे। वे शक्तियां है क्षेत्रवाद, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार और भाई–भतीजावाद आदि। आइए एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र के मजबूत निर्माण में जुट जाएं।

ओ! फिर से जीना : महाश्वेता देवी

24 जनवरी को जयपुर साहित्योत्सव–2013 के शुभारम्भ पर प्रसिद्ध लेखिका महाश्ध्वेता देवी का दिया उद्घाटन संभाषण– शब्द। मैं नहीं जानती कि कहाँ से। एक लेखिका जो वेदना में है? शायद, इस अवस्था में पुनः जीने की इच्छा एक शरारतभरी इच्छा है। अपने नब्बेवें वर्ष से बस थोड़ी ही दूर पहुँचकर मुझे मानना पड़ेगा कि यह इच्छा एक सन्तुष्टि देती है, एक गाना है न 'आश्चर्य के जाल से तितलियाँ पकड़ना'। इसके अतिरिक्त उस 'नुकसान' पर नजर दौड़ाइए जो मैं आशा से अधिक जीकर पहुँचा चुकी हूँ।

अट्ठासी या सत्तासी साल की अवस्था में मैं प्रायः छायाओं में लौटते हुए आगे बढ़ती हूँ। कभी–कभी मुझ में इतना साहस भी होता है कि फिर से प्रकाश में चली जाऊँ। जब मैं युवती थी, एक माँ थी, तब मैं प्रायः अपनी वृद्धावस्था में चली जाती थी। अपने बेटे को यह बहाना करते हुए बहलाती थी कि मुझे कुछ सुनाई या दिखाई नहीं दे रहा है। अपने हाथों से वैसे टटोलती थी, जैसा अन्धों के खेल में होता है या याददाश्त का मजाक उड़ाती थी। महत्त्वपूर्ण बातें भूल जाना, वे बातें जो एक ही क्षण पहले घटी थीं। ये खेल मजेदार थे। लेकिन अब ये मजेदार नहीं हैं। मेरा जीवन आगे बढ़ चुका है और अपने को दुहरा रहा है। मैं स्वयं को दुहरा रही हूँ। जो हो चुका है, उसे आपके लिए फिर से याद कर रही हूँ। जो है, जो हो सकता था, हुआ होगा।

अब स्मृति की बारी है कि वह मेरी खिल्ली उड़ाए।

मेरी मुलाकात कई लेखकों, मेरी कहानियों के चरित्रों, उन लोगों के प्रेतों से होती है जिन्हें मैंने 'जिया' है, प्यार किया है और खोया है। कभी–कभी मुझे लगता है कि मैं एक ऐसा पुराना घर हूँ जो अपने वासियों की बातचीत का सहभागी है। लेकिन हमेशा यह कोई वरदान जैसा नहीं होता है! लेकिन 'यदि कोई व्यक्ति अपनी शक्ति के अन्त पर पहुँच जाए तब क्या होगा'? शक्ति का अन्त कोई पूर्णविराम नहीं है। न ही यह वह अन्तिम पड़ाव है जहाँ आप की यात्रा समाप्त होती है। यह केवल धीमा पड़ना है, जीवनशक्ति का ह्रास। वह सोच जिस से मैंने प्रारम्भ किया था वह है 'आप अकेले हैं '।

उस परिवेश से जहाँ से मैं आयी हूँ, मेरा ऐसा बन जाना अप्रत्याशित था। मैं घर में सब से बड़ी थी। मैं नहीं जानती कि आप के भी वही अनुभव हैं कि नहीं, लेकिन उस समय प्रत्येक स्त्री का पहला यौन अनुभव परिवार से ही आता था। और युवावस्था से ही मुझ में प्रबल शारीरिक आकर्षण था, मैं इसे जानती थी, इसे अनुभव करती थी और ऐसा ही मुझे कहा गया था। उस समय हम सभी टैगोर से काफी प्रभावित थे। शांतिनिकेतन में थी, प्रेम में पड़ी, जो कुछ भी किया बड़े उत्साह से किया। तेरह से अठारह वर्ष की अवस्था तक मैं अपने एक दूर के भाई से बहुत प्रेम करती थी। उसके परिवार में आत्मघात की प्रवृत्ति थी, और उसने भी आत्महत्या कर ली। सभी मुझे दोष देने लगे, कहने लगे कि वह मुझे प्यार करता था और मुझे न पा सका इसीलिये उसने आत्मघात कर लिया। यह सही नहीं था। उस समय तक मैं कम्युनिस्ट पार्टी के निकट आ चुकी थी, और सोचती थी कि ऐसी छोटी अवस्था में यह कितना घटिया काम था। मुझे लगता था कि उसने ऐसा क्यों किया। मैं टूट गयी थी। पूरा परिवार मुझे दोष देता था। जब मैं सोलह साल की हुई, तभी से मेरे माता–पिता विशेषकर मेरे सम्बन्धी मुझे कोसते थे कि इस लड़की का क्या किया जाए। यह इतना ज्यादा बाहर घूमती है, अपने शारीरिक आकर्षण को नहीं समझती है। तब इसे बुरा समझा जाता था।

मध्यवर्गीय नैतिकता से मुझे घृणा है। यह कितना बड़ा पाखंड है। सब कुछ दबा रहता है।

लेखन मेरा वास्तविक संसार हो गया, वह संसार जिस में मैं जीती थी और संघर्ष करती थी। समग्रतः।

मेरी लेखन प्रक्रिया पूरी तरह बिखरी हुई है। लिखने से पहले मैं बहुत सोचती हूँ, विचार करती हूँ, जब तक कि मेरे मस्तिष्क में एक स्पष्ट प्रारूप न बन जाए। जो कुछ मेरे लिए जरूरी है वह पहले करती हूँ। लोगों से बात करती हूँ, पता लगाती हूँ। तब मैं इसे फैलाना आरम्भ करती हूँ। इसके बाद मुझे कोई कठिनाई नहीं होती है, कहानी मेरी पकड़ में आ चुकी होती है। जब मैं लिखती हूँ, मेरा सारा पढ़ा हुआ, स्मृति, प्रत्यक्ष अनुभव, संगृहीत जानकारियाँ सभी इसमें आ जाते हैं।

जहाँ भी मैं जाती हूँ, मैं चीजों को लिख लेती हूँ। मन जगा रहता है पर मैं भूल भी जाती हूँ। मैं वस्तुतः जीवन से बहुत खुश हूँ। मैं किसी के प्रति देनदार नहीं हूँ, मैं समाज के नियमों का पालन नहीं करती, मैं जो चाहती हूँ करती हूँ, जहाँ चाहती हूँ जाती हूँ, जो चाहती हूँ लिखती हूँ।

वह हवा जिस में मैं साँस लेती है, शब्दों से भरी हुई है। जैसे कि पर्णनर। पलाश के पत्तों से बना हुआ। इस का सम्बन्ध एक विचित्र प्रथा से है। मान लीजिए कि एक आदमी गाड़ी की दुर्घटना में मर गया है। उसका शरीर घर नहीं लाया जा सका है। तब उसके सम्बन्धी पुआल या किसी दूसरी चीज से आदमी बनाते हैं। मैं जिस जगह की बात कर रही हूँ, वह पलाश से भरी हुई है। इसलिए वे इसके पत्तों का उपयोग करते हैं एक आदमी बनाने के लिए।

पाप पुरुष। लोक विश्वास की उपज। शाश्वत जीवन के लिए नियुक्त। वह दूसरे लोगों के पापों पर नजर रखता है। वह कभी प्रकट होता है, कभी नहीं। उसने स्वयं पाप नहीं किया है। वह अन्य सभी के अतिचारों का लेखा–जोखा रखता है। उनके पापों का। अनवरत। और इसीलिए वह ६ ारती पर आता है। छोटी–से–छोटी बातों को लिपिबद्ध करते हुए। एक बकरा। दण्डित। दहकते सूरज के नीचे अपने खूँटे से बँधा हुआ। पानी या छाया तक पहुँचने में असमर्थ। तब पाप पुरुष बोलता है, 'यह एक पाप है। तुम ने जो किया है वह गलत है। तुइ जा कोरली ता पाप।'

वस्तुतः यह एक मनुष्य नहीं है। केवल एक विचार की अभिव्यक्ति है।

यह एक दण्ड हो सकता है। उसने कोई भीषण अपराध किया होगा। शे होयतो कोनो पाप कोरेछिलो। कोई अक्षम्य पाप। और अब वह कल्पान्त तक पाप पुरुष बनने के लिए अभिशप्त है। वस्तुतः केवल एक ही पाप पुरुष नहीं है, कई हैं। उसी तरह जैसे कि इस कथा को मानने वाले प्रदेश भी कई हैं।

इससे भी सुन्दर कई शब्द हैं। बंगाली शब्द। चोरट अर्थात् तख्ता। और फिर डाक संक्रान्ति। इसका सम्बन्ध ा चौत्र संक्रान्ति से है। डाक माने डेके डेके जाय। जो आत्माएँ अत्यन्त जागरूक और चौतन्य हैं, वे ही इस पुकार को सुन सकती हैं। पुराने साल की पुकार, जो जा रहा है, प्रश्घ्न करते हुए। पुराना साल आज समाप्त हो रहा है। और नया साल कल प्रारम्भ हो रहा है। क्या है जो तुम ने नहीं किया है ? क्या है, जो अभी तुम्हें करना है ? उसे अभी पूरा कर दो।

गर्भदान। यह बड़ा रोचक है। एक स्त्री गर्भवती है। कोई उसे वचन देता है कि यदि बेटी का जन्म होता है, उसे यह–वह मिलेगा। यदि बेटा होता है तो कुछ और मिलेगा। गर्भ थाकते देन कोरछे। दान हो चुका है जब कि बच्चा अभी गर्भ में ही है। इस कथा का कहना है कि अजात शिशु इस वचन को सुन सकता है, इसे याद कर सकता है, और इसे अपनी स्मृति में सहेज सकता है। बाद में वह शिशु उस व्यक्ति से उस वचन के बारे में उस गर्भदान के बारे में पूछ सकता है जो अभी हुआ नहीं है।

हमारा भारत बड़ा विचित्र है। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र के परध ी समुदाय को लें। एक विमुक्त समुदाय। चूँकि वे आदिवासी समुदाय हैं, बच्चियों की बड़ी माँग है। किसी गर्भवती स्त्री का पति आसानी से अजन्मे बच्चे की नीलामी करा सकता है या बेच सकता है। पेट की भाजी, पेटे जा आछे। जो अभी गर्भ में ही है। नीलाम कोरे दीछे। गर्भ के फल को नीलाम कर देता है।

शाहरुख खान का सच

❑ विपिन कुमार सिन्हा

शाहरुख खान का एक लेख एक अमेरिकी पत्रिका में प्रकाशित हुआ है जिसमें उन्होंने भारत में मुसलमानों से भेदभाव का आरोप लगाया है। उनके इस रहस्योद्घाटन से आहत पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने भारत सरकार से शाहरुख खान को सुरक्षा प्रदान करने का अनुरोध किया है और आतंकवादी सरगना हाफिज सईद ने उन्हें भारत छोड़कर पाकिस्तान में बसने की सलाह दी है। भारत में भी कट्टर मुसलमानों के अतिरिक्त उदारवादी मुसलमानों ने भी शाहरुख खान के वक्तव्य से सहमति प्रकट की है।

इस समय मुसलमानों के कुछ कथित रहनुमाओं ने आजादी की पूर्व वाली स्थिति का निर्माण करने का बीड़ा उठाया है। इस अभियान के तहत हैदराबाद के कुख्यात विधायक ओवैसी ने सार्वजनिक भाषण दिया कि यदि भारत सरकार १५ मिनट के लिए पुलिस को हटा ले, तो भारत के मुसलमान सौ करोड़ हिन्दुओं का सफाया कर देंगे। उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ मंत्री भारत माता को डायन कहते हैं। भारत सरकार द्वारा पद्म पुरस्कार से नवाजे गए चित्रकार मकबूल फिदा हुसेन भारत माता और हिन्दू देवी–देवताओं के नग्न चित्र बनाकर चित्र–प्रदर्शनी में सजाते हैं। मुस्लिम समुदाय इसकी निन्दा नहीं करता। कारण दृ मुस्लिम समुदाय में व्याप्त कुछ अलगाववादी तत्त्व इन सेलिब्रेटी कलाकारों और नेताओं के वक्तव्य को अपनी तहरीर में बार–बार दोहराकर जनमानस में अलगाववादी भावनाएं भरने में सफल हो जाते हैं। मुस्लिम समुदाय में असुरक्षा की भावना भरने के लिए शाहरुख खान जैसे तत्त्व ही जिम्मेदार हैं। समझ में नहीं आता कि जबतक भारतीय जनता उनको सिर–आंखों पर बिठाकर रखती है, तबतक तो वे सर्वजन की बात करते हैं लेकिन जैसे ही उनका कैरियर ढलान पर पहुंचता है, उन्हें अपने एवं अपने संप्रदाय के साथ भेदभाव नजर आने लगता है। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान अजहरुद्दीन, जबतक कप्तान रहे, प्रसन्न रहे लेकिन जैसे ही हेन्सी क्रोनिए के साथ मैच फिक्सिंग में उनकी संलिप्तता के प्रमाण सामने आए, उन्होंने यह कहना शुरु कर दिया कि मुसलमान होने के कारण उन्हें फंसाया गया है। शाहरुख खान का भी कैरियर ढलान पर है। वे इसे पचा नहीं पा रहे हैं।

अपने क्षुद्र स्वार्थों में फंसे ये लोग उस देश और उस समुदाय पर अनर्गल आरोप लगा रहे हैं जिसने अपने हितों की बलि देकर इन्हें प्रोत्साहित किया है। क्या यह सत्य नहीं है कि धर्म के आधार पर देश के विभाजन के बाद भी भारत की सरकार और बहुसंख्यक हिन्दू समाज ने भारत में रहने के इच्छुक १२ करोड़ मुसलमानों को सुरक्षा प्रदान की? आज भी भारत के मुसलमान जितना इस देश में सुरक्षित हैं, उतना विश्व के किसी भी देश में नहीं। जिस शाहरुख खान ने भारत में मुसलमानों के साथ भेदभाव की शिकायत की है, उसी शाहरुख खान के कपड़े तक अमेरिका के हवाई अड्डे पर सुरक्षा–जांच के नाम पर उतरवा दिए गए थेय फिर भी वे अमेरिका जाने के लिए लालायित रहते हैं और जिस देश और समुदाय ने उन्हें सुपर स्टार बनाया उसके खिलाफ अनर्गल प्रलाप करते है।

जिस देश में राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर तीन–तीन मुसलमान चुने जा चुके हों, ब्यूरोक्रेसी से लेकर राजनीति, न्यायपालिका से लेकर कार्यपालिका के शीर्ष तक जिस संप्रदाय के सदस्य प्रतिष्ठित रहे हों, वहां यह आरोप लगाया जाता है कि धर्म के नाम पर मुसलमानों से भेदभाव किया जाता है। यह आश्चर्यजनक ही नहीं अत्यन्त दुखद और शोचनीय भी है। तथ्य यह है कि संगठित वोट बैंक होने के कारण मुसलमानों को विशेषाधिकार प्राप्त है जो हिन्दू समुदाय या किसी अन्य अल्पसंख्यक संप्रदाय को प्राप्त नहीं है। उन्हें उनके धार्मिक क्रिया–कलापों के लिए भी सरकारी खजाने से धन उपलब्ध कराया जाता है। हज यात्रा के लिए हजारों करोड़ रुपयों की सब्सिडी दी जाती है, जो टैक्स के माध्यम से बहुसंख्यक जनता से वसूला जाता है। हिन्दुओं के सभी बड़े मन्दिरों को सरकार ने अधिगृहित कर रखा है, वहां के चढ़ावे पर भी सरकार का ही अधिकार है। लेकिन कोई भी मस्जिद सरकारी नियंत्रण में नहीं है। दिल्ली के जामा मस्जिद को पाकिस्तानी झंडा लगाने की भी अनुमति प्राप्त है। शुक्रवार की दोपहर में हर मुसलमान को सरकारी महकमों में दो घंटे की शार्ट लीव नमाज पढ़ने के लिए दी जाती है। ऐसी सुविधा किसी अन्य धर्मावलंबी को नहीं मिलती। मुसलमानों के मदरसों को सरकारी अनुदान मिलता है और हिन्दुओं के सरस्वती शिशु मन्दिरों को बन्द कराने का प्रयास किया जाता है। इस देश ने जो सम्मान दिलीप कुमार (युसुफ खान), सलमान खान, शाहरुख खान, आमिर खान सैफ अली खान और मुहम्मद रफी को दिया है, उतना सम्मान क्या राज कपूर, देवानन्द, राजेन्द्र कुमार, अजय देवगन, कुन्दन लाल सहगल, मुकेश या किशोर कुमार को दिया है? सलमान खान मुंबई में सड़क के किनारे सो रहे चार लोगों को अपनी गाड़ी चढ़ाकर मार डालता है, उसका कुछ नहीं होता, सैफ अली खान रेस्टोरेन्ट में एक संभ्रान्त प्रवासी भारतीय के दांत अपने घूंसे से तोड़ देता है, पुलिस गिरफ्तार भी नहीं करती। संविधान में संसोधन द्वारा हिन्दू कोड बिल पास करके हिन्दुओं के धार्मिक मामलों में खुला हस्तक्षेप किया जाता है लेकिन मुस्लिम पर्सनल ला को छूआ भी नही जाता। भारत के अतिरिक्त विश्व के किस देश में मुसलमानों को ऐसी सुविधाएं सहज ही उपलब्ध हैं?

वास्तविकता यह है कि भारत में मुसलमानों को विशेषाधिकार प्राप्त है जिसके कारण फिल्म इन्डस्ट्री से लेकर कला–संगीत के क्षेत्र में भी उनका प्रतिनिधित्व उनकी जनसंख्या से अधिक है। भेदभाव की बात करने वाले सुनियोजित ढंग से इस देश की अखंडता, एकता और धार्मिक सहिष्णुता पर प्रहार कर रहे हैय साथ ही देशभक्त मुसलमानों की निष्ठा भी संदिग्ध कर रहे हैं।

सम्मान तलाशती नारी का 'नुमाईशी' बनता शरीर

❑ निर्मल रानी

देश की राजधानी दिल्ली में गत् 16 दिसंबर को हुई सामूहिक बलात्कार की घटना ने जहां पूरे देश में नारी उत्पीडन के विषय पर राष्ट्रव्यापी बहस को जन्म दिया है वहीं ब्रिटेन जैसे मुल्क में भी इस दौरान इसी विषय पर चर्चा छिड़ी हुई है। गत् दिनों ब्रिटेन में सरकारी तौर पर जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार वहां महिलाओं के साथ होने वाले बलात्कार तथा नारी उत्पीडन के मामले भारत से कहीं ज़्यादा दर्ज किए जाते हैं। गोया कहा जा सकता है कि क्या विकसित देश तो क्या विकासशील देश हर जगह नारी समाज के साथ जुल्म व अत्याचार की घटनाएं आम बात हैं। भारत में तो इस बहस ने इतना अहम स्थान हासिल कर लिया है कि पिछले दिनों जयपुर में कांग्रेस की चिंतन बैठक भी इस विषय पर चर्चा के बिना पूरी नहीं हो सकी। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह तथा यूपीए अध्यक्षा सोनिया गांधी सहित कई नेताओं ने महिलाओं की सुरक्षा को लेकर चिंता जताई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि सृष्टि की रचना से लेकर समाज के व प्रत्येक परिवार के संचालन तथा विकास में महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपनी बराबर भागीदारी दर्ज कराई है। इसके बावजूद प्राय: ऐसे समाचार सुनने को मिलते है कि निजी परिवारों से लेकर सडक, मोहल्लों, गलियों, बाजारों, स्कूल– कॉलेज, बस–ट्रेन, शापिंग मॉल, हॉस्पिटल, कार्यालय आदि सभी जगहों पर महिलाओं को उत्पीडन का सामना करना पड़ता है। गोया महिला अपने–आप को कहीं भी सुरक्षित महसूस नहीं करती। दुर्भाग्यपूर्ण तो यह है कि महिलाओं को गली के आवारा कुत्तों या गाय–भैंसों से भी उतना डर नहीं लगता जितना कि वह अपने सजातीय प्राणी अर्थात् पुरुष से भयभीत दिखाई देती हैं।

पिछले दिनों भारत में इस विषय पर जो लंबी बहस छिड़ी है उसमें कुछ ऐसे तर्क भी सामने आ रहे हैं जिनमें यह कहा जा रहा है कि महिलाओं के यौन शोषण अथवा उनके यौन आकर्षण के लिए महिलाएं स्वयं भी जिघ्म्मेदार हैं। उदाहरण के तौर पर यदि खेलकूद या स्कूल जाने हेतु प्रयोग में आने वाले आवश्यक समझे जाने वाले स्कर्ट जैसे यूनीफार्म के उपयोग की बात छोड़ दें तो इसके अतिरिक्त साधारण तौर पर महिलाओं को अपने शरीर के बेहूदा प्रदर्शन की आखिर क्या जरूरत है? राखी सावंत तथा पूनम पांडे या मल्लिका शेरावत जैसी महिलाएं आखिर किस बलबूते पर या अपनी किस योग्यता के आधार पर पुरुषों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं। यह बहुचर्चित 'न्यूड फोटो शूट' आखिर किस बला का नाम है और क्यों किया जाता है? क्या देश व दुनिया में कोई वस्तु बिना नारी शरीर प्रदर्शन के अथवा उसमें सेक्सी दृश्य दिखाए हुए नहीं बिक सकती? फिर आखिर प्रत्येक विज्ञापन में महिलाओं और विशेषकर उनके शरीर के नग्र एवं बेहूदे प्रदर्शन को ही क्यों महत्व दिया जाता है? तीन दशक पुरानी एक फिल्म में अमिताभ बच्चन जैसे महानायक ने एक कम कपड़े पहनने वाली हीरोईन द्वारा थाने में जाकर यह शिकायत किए जाने पर कि उसे देखकर लडकघे सीटी बजाते हैं, इसपर पुलिस इंस्पेक्टर का किरदार अदा कर रहे अमिताभ ने यही जवाब दिया था कि 'आपके इन कपड़ों को देखकर लडकघें की सीटी नहीं तो क्या मंदिर के घंटे बजेंगे'? निश्चित रूप से अमिताभ बच्चन का तीन दशक पुराना यह डॉयलॉग कल भी सवाल खड़े करता था और आज भी सवाल खड़े करता है।

इसमें कोई शक नहीं कि हम भारतीय संस्कृति के अनुसार प्राचीन युग में वापस जाने या उस दौर का अनुसरण करने जैसी बातें तो न ही सोच सकते हैं न सोचना चाहिए। न ही हमें उस दौर में वापस जाने की कोई जरूरत है। सिर पर घूंघट डालकर घरों में कैद रहने से केवल नारी ही नहीं बल्कि पूरे समाज के पिछडने की प्रबल संभावना बनी रहती है। हम निश्चित रूप से आधुनिक युग में जी रहे हैं तथा समाज के विकास में पुरुष व महिलाओं की सांझीदारी लगभग बराबर होती जा रही है। इसलिए महिलाएं सडकघें पर भी निकलेंगी। स्कूल–कॉलेज,बाजार, आफिस, सफर हर जगह महिलाओं की प्रबल उपस्थिति जरूर देखी जाएगी। और देखी जानी चाहिए। परंतु इसका अर्थ यह भी नहीं कि बाहर निकलने वाली महिलाएं या सार्वजनिक रूप से पुरुषों के साथ बैठने–उठने व काम करने वाली महिलाएं अपने शरीर की नुमाईश भी हर वक्त करती रहें। शरीर की ऐसी नुमाईश आखिर महिलाएं क्योंकर करती हैं और किसे दिखाने के लिए करती हैं। यदि आप भीषण सर्दी में किसी विवाह समारोह में देखें तो युवतियां बिना किसी गर्म लिबास के तथा पूरी तरह अपने आभूषण व शरीर का प्रदर्शन करते दिखाई देती हैं। आखिर इस प्रकार की नुमाईश या शरीर प्रदर्शन का मकसद पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करना नहीं तो और क्या होता है। और जब महिलाओं के शरीर की इस नुमाईश ने आम लोगों को विशेषकर पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित किया तभी यही नारी शरीर बाजार की एक वस्तु बन कर रह गया। फिर क्या फिल्मी गीत हों तो क्या आपत्तिजनक फिल्मी दृश्य,क्या शायर की गजल हो तो क्या अफसाना निगार के अफसाने। क्या किसी उत्पाद बेचने का विज्ञापन तो क्या मॉडलिंग का रैंप। हर जगह महिलाओं को केवल उनके शरीर प्रदर्शन के लिए ही अहमियत दी जाने लगी । तमाम क्लबों व बार में महिलाएं अपनी मनमोहक अदाओं व अपने यौवन व आकर्षक डांस व अंदाज के लिए पुरुष ग्राहकों के आकर्षण का केंद्र बनी रहती हैं। अब तो महिलाओं के शरीर प्रदर्शन से क्रिकेट जैसा पाक–साफ खेल भी अछूता नहीं रहा। फिल्मी सितारों का इस खेल में दिलचस्पी लेना तो क्रिकेट को बढ़ावा देने के पक्ष में नजर आया। परंतु इसमें चियरलीडर्स का शामिल होना खेल भावना के कतई विपरीत है। जाहिर है यहां भी महिलाओं को

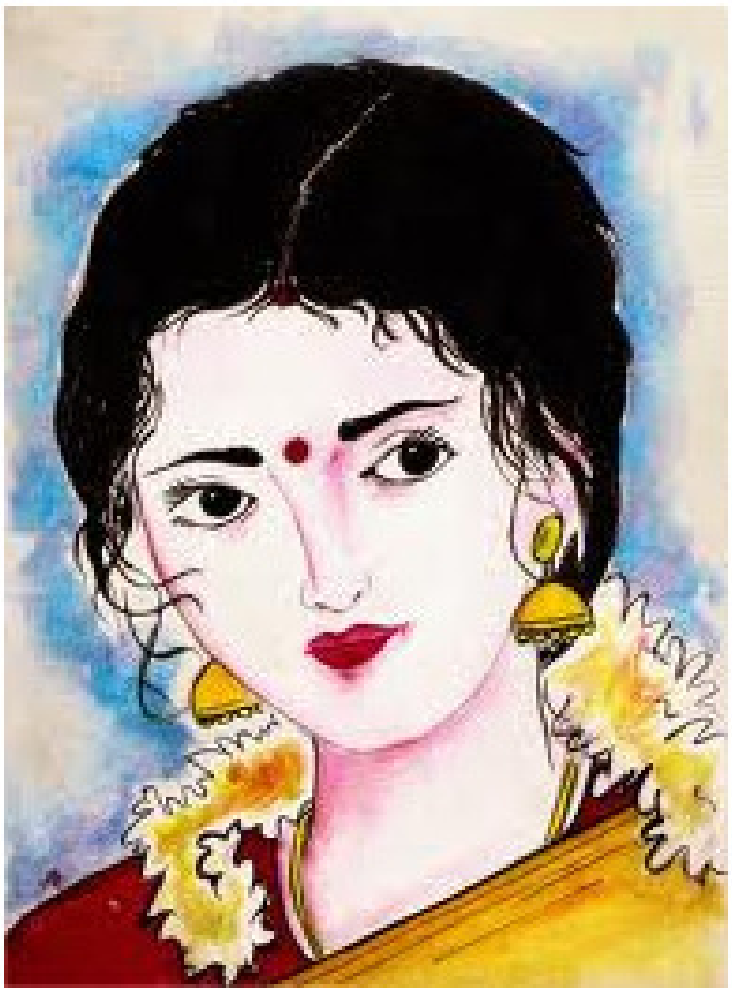

उसके शरीर के प्रदर्शन के माध्यम के रूप में ही प्रयोग किया गया।

पिछले दिनों पाकिस्तान की वीना मलिक नामक एक अदाकारा ने अच्छी–खासी शोहरत बटोरी। उनकी इस शोहरत के पीछे भी कोई अतिरिक्त अदाकारी का हुनर शामिल नहीं था। न ही उनकी आवाज व अंदाज में कोई विशेष जादू था। न ही वह बेपनाह सुंदरता की मूरत हैं। हां अपने शरीर के प्रदर्शन में जरूर उसने कोई कसर उठा नहीं रखी। पूरी तरह निर्वस्त्र होकर उसने अपने कई फोटो सेशन एक विदेशी पत्रिका के लिए कराए। जाहिर है इस प्रकार के कृत्य न तो मानवीय आधार पर उचित हैं न ही नारी के सम्मान के दृष्टिकोण से सही ठहराए जा सकते हैं। न ही दक्षिण एशियाई संस्कृति इस बात की इजाजत देती है। और न ही इस प्रकार के बेहूदे और भोंडे प्रदर्शन को प्रगतिशीलता या आधुनिकता का नाम दिया जा सकता है। यह तो महज चंद पैसों की खातिर तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए अपनाया जाने वाला एक शार्टकट हथकंडा है। पूनम पांडे जैसी भारतीय महिलाएं भी इसी श्रेणी में आती हैं जोकि अपनी योग्यता के बल पर तो कुछ अर्जित नहीं कर पातीं केवल अपने शरीर का प्रदर्शन कर व बेशर्मी भरे बयान देकर मीडिया में छाई रहना चाहती हैं। भारतीय सिनेमा हालांकि अपने शानदार सौ वर्ष पूरे कर चुका है। परंतु इस सिनेमा उद्योग ने मधुबाला, मीनाकुमारी, वैजयंती माला, माला सिन्हा, आशा पारिख, शर्मिलाटैगोर,शबाना आजमी व हेमा मालिनी जैसी अदाकाराओं के बेजोड़ अभिनय के बल पर प्रसिद्धि प्राप्त की है न कि मल्लिका शेरावत,राखी सावंत व पूनम पांडे जैसी महिलाओं की बदौलत जोकि अदाकारी से ज़्यादा ध्यान अपने सेक्सी शरीर को बेहूदे ढंग से प्रदर्शित कर पुरुषों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में लगी रहती हैं।

लिहाजा नारी उत्पीडन या महिलाओं से की जाने वाली छेड़छाड़ के विषय पर पुरुषों को ही शत–प्रतिशत जिघ्म्मेदार ठहराना भी मुनासिब नहीं है। निरूसंदेह पुरुषों को बचपन से ही पारिवारिक स्तर पर अच्छे संस्कार दिए जाने व महिलाओं के प्रति सम्मान व आदर–सत्कार से पेश आने की शिक्षा दिए जाने की सख्त जरूरत है। महिलाओं के साथ बेवजह छेड़छाड़ करने वालों व उन्हें अपमानित व पीडिघ्त करने वालों के साथ भी सख्ती से पेश आने की आवश्यकता है। बलात्कार जैसे जघन्य अपराध करने वालों को सख्त से सख्त सजा भी दी जानी चाहिए। परंतु न केवल नारी बल्कि वर्तमान दौर में नारी सम्मान को लेकर छिड़ी बहस में भाग लेने वाले जिघ्म्मेदार लोगों विशेषकर फिल्म व विज्ञापन जगत के लोगों को भी चाहिए कि वे केवल टीवी की बहस में ही नारी सम्मान की बात कर स्वयं उपदेशक बनने के बजाए +खुद भी नारी के शरीर को नुमाईश का सामान बनाने से बाज आएं। फिल्मों में नारी शोषण के दृश्यों को बेवजह दिखाने की कोशिश न करें। नारी के शरीर पर आधारित या यौन आकर्षण वाले गीत–संगीत से भी परहेज किए जाने की जरूरत है। खुद फिल्म सेंसर बोर्ड को भी ऐसे उकसाऊ व भडकाऊ दृश्यों के लिए अपनी कैंची तेज कर लेना चाहिए। कहानीकार व साहित्यकार भी महिलाओं के सम्मान को प्राथमिकता दें बजाए इसके कि गंदे व अश्लील साहित्य केवल धन अर्जित करने के लिए बाजार में परोसे जाएं और इसे व्यवसायिक मांग बताकर न्यायोचित ठहराने की कोशिश की जाए। इसके अतिरिक्त सबसे बड़ी बात तो यह है कि बिना किसी के उपदेश की प्रतीक्षा किए हुए महिलाओं को भी अपने पहनावे संयमित रखने चाहिए ताकि पुरुषों की आमतौर पर पडने वाली बुरी नजर से वे अपने को व अपने शरीर को बचा सकें। अकारण भोंडी पौशाकें पहनना महिलाओं को खासतौर पर संस्कारी महिलाओं को वैसे भी शोभा नहीं देता। यदि हमें सम्मान की तलाश है तो हमें अपने शरीर की नुमाईश से भी परहेज करना होगा।

सख्त कानून के साथ अच्छे संस्कार भी जरूरी

❑ बैसिल जोसेफ

मनुष्य के भीतर छिपी बुराइयों को किसी कानून या सख्ती से तो दबाया जा सकता है, लेकिन खत्म भी नहीं किया जा सकता इसलिए सख्त कानून के साथ अच्छे संस्कार का प्रचार करना भी जरूरी हैं। आज के नौजवानों में संस्कारो की कमी है और संस्कारों के आभाव में गलत राह पर निकल जातें हैं और छोटी–छोटी उमर में अपराध की दुनिया में कदम रख लेते हैं। अच्छे संस्कार माता–पिता अपनी संतानों को बचपन से ही देते हैं ताकि उनके बच्चे संस्कारी बने और गलत राह पर न चलें, आजकल बच्चों को अच्छे संस्कार देना माता–पिता के लिए मुश्किल होता जा रहा है क्योकि बच्चे वही करना चाहते हैं जो उन्हें अच्छा लगता हैं।

अगर कानून की बात करें तो सख्त कानून ना होने के कारण नौजवानों और अपराधियों का मनोबल बढ़ता हैं। आज साक्षर युवा युवतियों में वृद्धी हुई है और आज की जागरूकता जो हमें दृष्टिगोचर कर रही है ये उसी का परिणाम है लेकिन अपराधियों से निबटने का तरीका 100 साल पुराना है। बलात्कार जिसमें हिंसा हो, स्त्री को जान से मार देने की कोशिश हो, उसकी कानून प्रक्रिया इतनी धीमी होती है की आखिर में अपराधी अक्सर छूट जाता हैं और कुछ स्त्रियाँ व लड़कियाँ थक कर हार मान कर खुदकुशी कर लेती हैं। समाज को नजरिया बदलने में सालो–साल लगें लेकिन कानून तो सख्त हो सकता है और जरूरी भी है आजकल के हालात देखते हुए बलात्कार एक मनोवीकार है जिसका स्त्रियों के पहनावे से कोई संबंध नही है, दरअसल वर्तमान समय में जब लड़कियों, महिलाओं को बड़े शहरों में नौकरी करने के अधिकार अवसर प्रदान हो रहें हैं तो उनकी सुरक्षा के लिए और भी जरूरी हो जाता है की इस विकास से ग्रसित लोग दंडित होने से डरे और शासन अपना काम पहले करें, लोग अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें। हम बात करते हैं आज के युवाओं की जिनके आदर्श सचिन, राहुल, सलमान, शाहरुख हैं स्वामी विवेकानंद और भगत सिंह नहीं! सच तो ये है की उनके कोई आदर्श ही नहीं हैं और न ही कोई सीधांत हैं। किस समाज में रह रहें हैं ???क्या इस समाज को विकसित और सभ्य कह सकते हैं? कहाँ रोक पा रही हैं लड़कियाँ इस हैवानी सोच को और कहाँ रोक पा रहें हैं हम इन सब घटनाओं को। अभी हाल ही में मेडिकल की छात्रा के साथ चलती बस में बलात्कार हुआ और उसे निर्वस्त्र कर उसे और उसके साथी दोस्त को इतनी ठंड में बीच सड़क पर फैंक दिया और वो लहू लुहान हालत में पड़े रहे, कितने लोग वहाँ से गुजरे रुके और चल दिए किसी ने पुलिस को सूचित करने की कोषिष नही करीं ना हॉस्पिटल पहुँचाने की, बस तमाशा देख आगे चल दिए, क्या ये हैं इंसानियत? अगर उस छात्रा को ऑटो वाला टाइम पर घर पहुँचा देता तो आज वो हम सबके बीच होती। हमें सख्त कानून के साथ साथ अपने आप को भी बदलना होगा अपनी सोच बदलनी होगी तभी इस देश में लड़कियाँ और स्त्रियाँ सुरक्षित रह सकेंगी।

UNFPA and Govt. of India launch multi- year programme for young people and women

The United Nations Population Fund (UNFPA) and the Government of India have launched a reproductive health and life skills education programme to fulfil the reproductive rights of young people, women and marginalised communities. The strategy will also impact the status of young girls and women. UNFPA and the Govt. of India have signed a five- year plan of co-operation in-effect from 2013 till 2017 that is set to make an important contribution to achieving health objectives articulated in the government's 12th five-year plan, and accelerate progress on international development targets including the MDGs. The joint agreement between the Ministry of Health and Family Welfare and UNFPA was signed on the 30th of January, 2013.

The programme focuses on India's largest ever population of young people. Secretary, Ministry of Health and Family Welfare (MOHFW), Mr Pradhan, said, "This programme focuses on key priorities for our population- young people, gender, and ageing. This partnership will help us become more sensitised to their needs and develop expertise to plan policies accordingly."

While focusing on young people, UNFPA will also help the government prepare to meet the needs of a rapidly ageing population. By 2030, the number of people over 60 will double. And by 2050, around 20 per cent of the population would be elderly.

Right now, India is one of the youngest nations in the world. 358 million or almost one third of the country's population is young aged 10-24 years. Yet, almost half of girls are married before the age of 18. One in five young women, aged 20-24, has a child before she is 18. Two of five maternal deaths occur in women aged 20-24.

Universal access to sexual and reproductive health and delivering gender equality are central to the ICPD plan of action and MDGs. While UN member countries agreed to meet these targets by 2015, in many developing countries, including in India, much remains to be done.

Frederika Meijer, UNFPA representative India and Bhutan, rationalised the focus of this programme: "Investing is the health of vulnerable young women and marginalised communities including tribals and minorities is a key priority for UNFPA, as we believe that investing in young girls helps break cycles of poverty within families. We will work with the government to reach out to greater numbers of adolescents and their families with information on the benefits of delaying marriage, letting girls stay in school longer, delaying child bearing and increasing their access to voluntary family planning. If a young girl can plan her family, she can plan the rest of her life."

Key to UNFPA's mandate is providing young people a gender sensitive, life skills–based sexual and reproductive health education. A life-skills education gives adolescents information and skills to negotiate real life situations, including reproductive health illnesses such as HIV/AIDS, and moulds their attitudes to gender and substance abuse, impacting several development objectives. With the help of various ministries, the life-skills education would be expanded to reach not only young people in schools, but also those who out of school in various states of the country.

During the course of this programme, UNFPA will work towards ensuring that young people are partners in development, and have a say in national policies. We will lead extensive consultations between the government, civil society and young people, to factor in their needs in national policy- making.

Achieving gender equality is a key area of co-operation. UNFPA will lend technical expertise to the govt. to address a highly skewed sex ratio and reduce the high incidence of child marriage- key indicators of gender inequality.

Mass Education Campaign Needed to Cure India's Rape Epidemic

Implementing Justice Verma Committee findings alone not enough to tackle mindset leading to violence against women -- Government must enlist Bollywood and Cricket to change attitudes

As the Indian government released the Verma report today, a new report was launched by the campaigning organisation Avaaz calling on the Indian Government to launch a mass education campaign to help cure the rape epidemic which has become the fastest growing crime in India, growing by 875% over the last 40 years. Over 5,000 Avaaz members sent submissions to the Justice Verma Committee. While Avaaz supports its recommendations, implementing these alone will not be enough to tackle the war on women.

Ricken Patel, Executive Director of Avaaz, said:

"Rape is simply rampant in India today. To treat this cancer, PM Singh must back a massive, long-term public education campaign that attacks the attitudes that permit and promote violence against women, harnessing Bollywood and cricket to take the message into every Indian home."

Over 1.1 million people have backed Avaaz's call for the Indian government to launch this public education campaign -- a huge mandate for action -- with 5,000 Avaaz members making submissions to the Verma Committee. Today in India, Avaaz will deliver the report and the petition to key decision makers on board a bright pink bus with female activists across Delhi.

The report Curing India's Rape Epidemic: The Education Option highlights extensive evidence that mass public education programs have had a significant impact on popular cultural attitudes and behaviour. It illustrates how India's Bell Bajao campaign achieved dramatic increases in awareness of laws and discussion on domestic violence and how the government of California reduced cigarette sales by over 230 million packs in just 2 years with a massive public education campaign.

Avaaz is urging that PM Singh make this issue the legacy of his era in office, introducing 4 key recommendations before the three month anniversary of

the horrendous rape attack in Delhi. These include:

1. Put your money where your morals are. To work, this campaign will need an investment of at least 50 rupees ($1 US) a year for every Indian citizen to have impact -- though much of this cost would be covered via partnerships with private media.

2. Commit the time, don't cut corners. A full-scale media and outreach barrage should last at least four years, while education programmes in schools and other grassroots education efforts should be permanently instituted.

3. Establish a responsible body with the best brains and the power to make this happen. Prime Minister Manmohan Singh should establish a body with real authority and comprised of the best brains from media, cricket, Bollywood and civil society.

4. Monitor, evaluate and change. Establish goals and targets for the reduction of sexual assault, so that progress is watched and carefully monitored.

India currently sits below Bangladesh and Pakistan in the Gender Inequality Index (at 129 out of 146 nations) and the report argues that there may never be a better chance to fight for an end to sexual violence and complete gender equality in India.

Avaaz is the biggest online campaigning community in India with over 800,000 members and our Indian members have campaigned on various issues including the passage of the Lokpal bill, to help free Indian migrant workers who were caught in bonded labour in Bahrain.

11 जनवरी, 2013 को सविता असीम के गजल संग्रह 'मैं इंतजार में हूँ' का लोकार्पण

विजय कुमार मल्होत्र

सृष्टि आर्ट्स और साहित्य आजकल के तत्वावधान में इंडिया इस्लामिक कल्चरल सैंटर के सहयोग से इस्लामिक सैंटर के सभागार , दिल्ली में सविता असीम के गजल संग्रह 'मैं इंतजार में हूँ' का लोकार्पण हुआ। बॉलीवुड के जाने–माने अभिनेता, साहित्यप्रेमी जनाब फारुख शेख ने किताब का विमोचन किया। मुख्य अतिथि की भूमिका पद्मश्री, पद्मभूषण प्रख्यात कवि डॉ. गोपाल दास 'नीरज' ने निभायी और पूर्व मंत्री और महामहिम पूर्व राज्यपाल डॉ. बलराम जाखड़ ने इस समारोह की अध्यक्षता स्वीकार कर इस कार्यक्रम को शीर्ष पर पहुँचा दिया.वक्ता के रूप में प्रकाशक और प्रसिद्ध शायर मंगल नसीम, ज्योतिषाचार्य अजय भाम्बी, पूर्व मंत्री मणिशंकर ऐय्यर, मायनॉरिटी कमीशन के चेयरमैन सफदर खान मंच पर शोभायमान थे. विमोचन के बाद सविता असीम ने अपने कुछ अशार पढ़े और कहा, आप सब मेरी ताकत हैं और आपने ही सविता को असीम बनाया है. मेरी यह किताब आप सुधीजनों तक पहुँची है. यह किताब कैसी है, आप प्रबुद्ध पाठकों पर फैसला छोड़ती हूँ।

इस मौके पर जनाब फारुख शेख ने कहा कि सविता असीम की यह किताब साहित्य जगत् में एक और मोती के रूप में शामिल हो गयी है। भाषा की दुर्दशा पर भी शेख साहब ने चिंता जतायी. मणिशंकर ऐय्यर ने कहा कि सविता सादा जबान में अपनी बात कहती है और सांप्रदायिक सद्भाव को बनाये रखने की कोशिश करती है। अजय भाम्बी ने भी किताब आने पर बधाई दी और दूसरी किताब जल्द लाने की ख्वाहिश भी जतायी. मंगल नसीम जी ने सविता को बहुत दुआएँ दीं और मशवरे में अपना एक शेर पढ़ा, परिंदे हौसला कायम उड़ान में रखना, हरेक निगाह तुझी पर है, ध्यान में रखना नीरज जी ने कहा कि सविता असीम की शायरी में कोई बात अखरती नहीं है। उसके कई अशार जबान पर चढ़ जाते हैं। सविता को मेरी तरफ से बहुत बधाई। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. बलराम जाखड़ जी ने किताब के बारे में कहा कि सविता ने हिंदी और उर्दू का मिश्रण कर भाषा को बहुत सरल बना दिया है। कार्यक्रम में उपस्थित कई जानी–मानी शख्सियतें थीं, जैसे वीरेंद्र शर्मा, सतीश बब्बर,देवमणि दुबे, एस.के. अग्रवाल, रूप चौधरी और कई प्रसिद्ध शायर और कवि मंच संचालन मोइन शादाब ने किया। दिल्ली घराने के गजल गायक इमरान खान ने सविता असीम के कलाम को अपनी गायकी के द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध ा कर दिया। गजल गायकी के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

मेरी बस यात्रा...

नियति की शिक्षा

भावना सिसोदिया

16 अगस्त 2011 की बात है मै अपने ड्राइंग रूम मे टीवि पर जनलोक पाल बिल हेतु अन्ना हजारे जी के अनशन और सहयोगियों के संघर्ष की खबर देख व सुन रही थी। मैंने कई चैनल बदले परन्तु प्रत्येक चैनल पर इसी समाचार के अलग–अलग पहलु प्रसारित किये जा रहे थे।

मेरा मन थोडा प्रफुलित हुआ यह सोच कर की हमारा मीडिया बॉलीवुड मसालों से हटकर ऐसे सामाजिक मुद्दो में भी इतनी रूचि ले सकता है। दूसरा हमारे देश मै क्रिकेट क आलावा भी कोई मुददा है जिस पर भारतवासियों को राष्ट्री प्रेम का संपादन जाग्रत किया जा सकता है।

कुछ दिनों बाद मेरी कॉलेज की छुट्टियाँ खत्म हो गई इसलिए मैं मध्य प्रदेश परिवहन नगर निगम की एक बस मै चढ़ गई जो मथुरा की और रवाना होने वाली थी सारी सीट भर चुकी थी इसलिए मै कंडेक्टर की बगल वाली सीट पर ही बैठ गई बस चली और यात्रा शुरू हुई और मैंने देखा की कंडेक्टर टिकट काट रहा था और अपने रजिस्टर मै दर्ज कर रहा था पर उसने 12 टिकटों में से सिर्फ 9 टिकेटो का रिकॉर्ड किया.. साफ तौर से भ्रष्टाचार हो रहा था बेशक हल्के फुल्के छोटे स्तर का था, इसलिए मै बातचित करने मैं उत्प्रेरित हुई और मैंने पुछा की – कंडेक्टर भैया पूरे सफर में आप कितना रुपिया जमा कर लेते हो?

कंडेक्टर – यही करीब 16000 से 17000 रुपये

मै – ये सारी आमदनी क्या सरकार को जाती है?

कंडेक्टर– थोडा सा दबंग था सच्ची बात थोक कर रखने वाला इसलिए बेहिचक हो कर बोला– नहीं दो चार हजार रूपये अपने पास रख लेते है मैंने मन ही मन सोचा और कहां वो तो मैंने अभी देखा भी था किस तरह सरकारी हिस्से पे कैंची चलाई जाती है 12 मै से 9 टीकटों के रिकार्ड दर्ज किया जा रहा है। लेकिन फिर मैंने बात बनाते हुए आगे पूछा अच्छा वैसे सरकार से पगार कितनी मिलती है?

कंडेक्टर–(मुँह बनाता हुआ)– सिर्फ 11000 रुपए प्रति माह।...

मै– तो क्या 11000 रुपए मै घर खर्च नहीं चलता क्या?

कंडेक्टर ने अपनी जीवन व्यथा सुनानी शुरू की ऐसा परतीत हो रहा था जैसे वह हर आम इन्सान की कथा है और कंडेक्टर उन का प्रतिनिधि हैं। दो वक्त की दाल सब्जी खरीदने में ही सारी कमाई सफा चट हो जाती है कल को मेरे बच्चे बड़े भी होगे। मैं भी चाहता हुँ की मेरी तरह वो भी कंडेक्टर न बने किसी बड़े दतर मै बाबु बने इसलिए उनकी फीस वगेरा अभी से जुटानी होगी। उसी दिन कॉलेज पहुंची 3 या 4 दिन बाद मझे किसी काम से आगरा जाना पड़ा लौटते समय फिर से एक बस लेनी पड़ी लेकिन कही और सीट न मिलने के कारण मुझे कंडेक्टर के बगल वाली सीट पर ही बैठना पड़ा या फिर नियति मझे कोई शिक्षा देना चाहाती थी, इसलिए मैंने अपनी टिकट ली और चुपचाप बैठ गई। थोड़ी देर बाद कंडेक्टर ने मुझ से मेरी टिकट मांगी और किसी और को दे दी। अब मैंने फिर से अपनी चुप्पी तोड़ी और उससे बातचित शुरू कर दी और मैंने पूछा–भैया , आप ने ऐसा क्यों किया?

कंडेक्टर–अरे, मैडम सब चलता है?

मैंने झुन्झुला कर कहां – जब कोई टिकट चेकर चड़ेगा और मुझ से टिकट के लिए पूछेगा तो?

कंडेक्टर–अरे! इस समय कोई नहीं चड़ेगा, मै हुँ ना

मैंने फिर पूछा–पर आपने ऐसे करा क्यों?

कंडेक्टर–मैडम 40 घंटे के सफर मै इतने खर्च होते है उसे हम ऐसे ही निकालते हैं।

मैंने इस कंडेक्टर से भी पगार का सवाल किया उसका तो पारा ही चढ़ गया जवाब में वह बोला siuth pay commission पास हो चुकी है पर अब भी हमें पहले वाली तनखा ही मिलती है... इसलिए जब सरकार हमारा खाती है तो हम भी उस का क्यों ना खाएं?

उधर अचानक ब्रेक लगने से बस को जोर का धक्का लगा और इधर मेरे मन को भी मेरे मन मै विचारो की आंधी से आ खड़ी हुई। एक एक करके के विचार मन मै प्रशन बन के आ खड़े हुए भीतर उचल पुथल मच गई। संतोष ही जीवन है और हाल ही में आई एक फिल्म का डायलोग– सबकी जरूरत कम है , इसलिए मुझ मै दम है! जैसे वाक्य और शब्द मुझे दम तोड़ते नजर आ रहे थे।

सारे मानो मंथन के बाद एक प्रशन सबसे बड़े आकार का चिन्ह लेकर मेरे सामने उभर आए। क्या एक अच्छी व्यवस्था बनाने से भ्रष्टाचार खत्म हो सकता है? क्या सिस्टम बदलने से सिस्टम चलाने वाले व्यक्ति या इन्सान बदल जायेगे? इंसानी दिमाग के उस खुराफात से कौन झुझेगा? क्या एक सखत कानून की सख्ती से इंसानों मै नैतिक असूलो को जन्म दिया जा सकता है? क्या बहार से बनाये गये सख्त वे कठोर नियम सुंदर वे नैतिक मूल्यों से परिपूरन मनुष्य का निर्माण कर पायेगे? वही व्यवस्था मनुष्य मे भय ड़ाल सकती पर क्या उसके आतंरिक गुणों का विकास कर पायेगी? क्या वे ईमानदार व कर्त्तव्य निष्पक्ष मनुष्य का निर्माण कर सकती है? सवाल भले ही मेरे है परन्तु जवाब तो हम सभी को तलाषने हैं।

मैंने खुद अपनी आंखो द्वारा साधारण कोटि के लोगो को यहां शेष्ट बनते हुए देखा है। कमजोरियों से जीत कर सचाई के शिकार की और बड़ते हुए देखा है, उन्हें देख के ऐसा लगता हैं की जैसे विपतिया चट्टानो को तोड़ सकती है ईमानदारो के ईमान को नहीं जिन्हें उन्होंने अपनी आशा और ईमानदारी पर भरोसा हैं।

इसलिए सवालों की कलि और घटाओ के बिच भी मै निराश नहीं हुँ मुझे आशा का सूरज टिमटिमाता दिखाई दे रहा हैं। मेरी उम्मीद कोई अन्य (कार्य) बिल पूरा करे या न करे पर ईमानदार पाल बिल जरुर पूरण करेगी।

नियति बनाई व पालन किया जा सकता हैं।

नियति के दम पर समाज की रचना की जा सकती हैं।

Publishing on 10th of every month
RNI No. 62500/95
REGD. No. DL (E)-01/5149/2012-2014
LICENCE TO POST WITHOUT
PRE-PAYMENT No. U(C)223/12-14

To,

If undelivered, Please return to:
न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन
ऑफ इण्डिया
POST BOX 9235, NEW DELHI-110 092

यदि आप लेख, रचना, समाचार, विचार प्रेषित करना चाहते हैं तो आप अपने अप्रकाशित लेख निम्न पते पर भेजें।

आपको *NAI* का यह अंक कैसा लगा, इस बारे में अपने सुझाव हमें निम्न पते पर भेजें।

एन. ए. आई.
A-115, Vakil Chambers, Top Floor,
Shakarpur, Delhi-110092, Ph.: 011-22058133

Editorial Board

Founder	Late Dr. M. R. Gaur
Editor Publisher-Printer	Vipin Gaur
Counsultant Editor:	Dr. Smita Mishra
Managing Editor:	Dilip Kumar
Legal Advisors:	Nikhat Anjum Malik
Advocate Delhi Highcourt	Rajesh Sharma
	Adv. P. Yadav
Office Secretary	Kavita Bamotra

- Bureau Chief -

Guwahati:	Runu Hazarika
Mumbai:	Mr. Dinesh K. Mishra
Bangalore:	Mr. M. K. Jain
Jaipur :	Mr. Banwar Singh Ranawat
Chennai:	Mr. P.C.R. Suresh
M.P. & C.G.	Mr. O. P. Jain
Kerela	Mr. Suvarna Kumar
Goa	Dr. Vivek Gaitonde

SANGRI-LA
Heaven of Earth
Sangri-la Infratech (P) Ltd.
Presents
Cottages, Villas, Flats
in "the LAP of Nature" to Harmonize mind, body & soul
For perfect Health, Relax, Adventure & Passion
8743050111; 8743078777; 0120-4169810
Address:- FF 5&6, One Mart Mall, Sec-6, Vasundhara, Ghaziabad (U.P.)
E-mail:- Sangrilagroup@yahoo.com
Web site- www.sangriladevelopers.com

DELHI Paramedical & Management Institute Estd. 1996
DPMI®
Delhi Paramedical & Management Institute
Campus: B-20, New Ashok Nagar (Near New Ashok Nagar Metro Station), Delhi 110 096, Ph.: 011-22715390, 22710006
Email: dpmidelhi@yahoo.in Web.: www.dpmiindia.com

Sushil Kumar Pandeyy
9958561832, 9213796552
MONEY MANAGERS
CONSULTANT- TAX MATTER, RETAIL ASSETS, WORKING CAPITAL
PAN CARD, ITR, BOOK, KEEPING, SALES TAX, PF, ESI, FACTORY ACT.
CMA Data, Cash Credit/Over Draft/WCDL/LAP. PL, DOD Limit, Housing Loan, Vehicle Loan insurance & Investment solution
Office:- A-115, Vakil Chamber, Top Floor, Shakarpur Delhi-92
Resi- D-17, Ganesh puri, Sahibabad, Ghaziabad (U.P.)

SNIPER™ SECURITAS
We believe in quality...
Contact:- Mr. Rajesh Singh Mob:9958277800, Ph. 011-32219061
A-115 Top Floor Vakil Chamber Shakarpur Delhi-92
email:info@snipersecuritas.com

Printed, Published by Vipin Gaur on behalf of News papers Association of India, Printed at Mayank Offset Process 794/95 Guru Ramdas Nagar Ext. Laxmi Nagar Delhi-92 and Published from J-51, DLF Dilshad Delhi-95, Editor: Gayatri Gaur. All disputes settled in Delhi Court only.